National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2019; 1(23): 41-43
© 2019 NJHSR
www.sanskritarticle.com

अशोक कुमार सैन
पीएचडी शोधार्थी,(एम.एण् एम.फिल हिंदी)
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,
धारवाड़, कर्नाटक

Correspondence:
अशोक कुमार सैन
पीएचडी शोधार्थी,(एम.एण् एम.फिल हिंदी)
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,
धारवाड़, कर्नाटक

"सतीश जमाली की कहानियों में समसामयिक समस्याएँ"

अशोक कुमार सैन

समसामयिक का अर्थ वर्तमानकालीन अथवा आज के परिप्रेक्ष्य को लेकर हैं। समसामयिकता शब्द का अर्थ होता हैं 'एक ही समय का, समकालीन, या वर्तमान समय' अत: यह कहा जा सकता हैं की समसामयिक का अर्थ वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में हैं।वर्तमान सदैव पूर्व पर आधारित रहता हैं या वर्तमान का पूर्व से हमेशा सम्बन्ध रहता हैं, वर्तमाना का पूर्व से संबध भविष्य की रुपरेखा तैयार करता हैं।

सतीश जमाली जी के कहानी क्षेत्र में आगमन का समय साँतवा दशक था। उनके समय की समस्याओ और आज की वर्तमान समस्याओं में कोई ज्यादा अंतर नही हैं बल्कि आज वे ही समस्याएं अपने नविन एवं बड़े रूप में हमारे सामने मौजूद हैं। इतिहासदर्शन के विषय में इटेलियन विद्वान विको की अवधारणा कही हद तक सटीक लगाती हैं की "मनुष्य की मूलभूत प्रवृतियाँ सदा सामान रहती हैं, अत: विभिन्न युगों के इतिहास में भी सामान प्रवृतियां मिलना स्वाभाविक हैं"[1]। मनुष्यों की इन्ही मूलभूत प्रवृतियों की वजह से तत्कालीन समस्याओं में और पूर्वकालीन समस्याओं में कोई ज्यादा अंतर नहीं रहता, अंतर सिर्फ परिस्थितों और स्वरूप का होता हैं।सतीश जमाली जी की कहानियों का समय भले ही सातवें-आठवें दशक का रहा हो पर उनमे चित्रित समस्याओं का आज के समय से भी वैसा ही सम्बन्ध हैं जैसा उस समय था। सतीश जमाली की कहानियों में चित्रित, अभिव्यक्त तत्कालीन समस्याएँ आज के समय में भी हमारे समाज में उतना ही प्रासंगिक हैं जीतनी उस समय थी।

आज के समय की समसामयिक समस्याएँ हैं, उच्च वर्ग- निम्न वर्ग में बढ़ते अंतर, आर्थिक बदलावों से मध्य वर्ग की बढती समस्याएँ, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, बेरोजगारी, असमानता, अशिक्षा गरीबी, बाल श्रमिक, असंतोष, छात्र असंतोष, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, जानलेवा बीमारियाँ, दहेज़, बाल विवाह, भ्रूण हत्या, विवाह विच्छेद, बाल अपराध व शोषण, मद्यपान, जातिवाद, निर्धनता, जनसंख्याँ में बढौतरी, महंगाई आदि वर्तमान समय की मुख्य समस्याएँ हैं जिसमे से अधिकांश समस्याओं को सतीश जमाली जी ने अपने कहानियों के द्वारा व्यक्त किया हैं। सतीश जमाली जी ने निम्न वर्ग पर हो रहे शोषण और अन्याय के विरुद्ध अपने स्वर को बुलंद किया हैं। अपनी कहानी 'युद्ध' में उन्होंने मार्क्स दर्शन को व्यक्त किया साथ ही मजदुर वर्ग अब अपने खिलाफ हो रहे शोषण और अत्याचार से त्रस्त हो चूका हैं वह अब आक्रोशित हो कर इन भ्रष्ट और शोषण व्यवस्था को नष्ट कर देना चाहता हैं और उस हेतु वह अब संघर्ष के लिए पूर्ण रूप से कटिबद्ध हैं। "मौजीराम का केस कोई पहला केस नहीं हैं, पचासों बार पहले भी ऐसा हो चूका हैं । आखिर कब तक हम चुप बैठेंगे। अब समय हैं की हम अपने को दांव पर लगा दे । हम हार गए तो सब की छटनी हो जायेगी,

परवाह नहीं, बड़े कामों के लिए कुर्बानियां भी देनी पड़ती हैं"[2]। सतीश जमाली जी ने अपनी कहानियों में मजदूरों की विभिन्न समस्याओं को चित्रित किया हैं। लेकिन उनकी कहानियों में मजदूर वर्ग अंततः संघर्ष का ही रास्ता चुनता हैं। वह पूंजीपति वर्ग के खिलाफ अपने आन्दोलन को अपनी आखरी सांस तक चलाये रखना चाहता हैं। वही दूसरी ओर भ्रष्टाचार आज के दौर में एक बहुत बड़ी समस्याँ बन गई हैं। भ्रष्टाचार ने सभी संस्थाओं को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। आजादी के एक दशक बाद ही हमारी राजनैतिक संस्थाएं एवं तंत्र भ्रष्टाचार के दलदल में धंसता नजर आ रहा था। इसका सिलसिला अब तब चलता रहा हैं। आज भ्रष्टाचार का सर्वत्र बोलबाला हैं हमारी संविधानिक संसथाएं भी इसकी चपेट में आ चुकी हैं। राजनैतिक तंत्र के भ्रष्ट होने की वजह से दूसरी संस्थाएं भी इसकी भेट चढ़ चुकी हैं। आज की राजनैतिक इच्छा शक्ति इससे पार नहीं पाना चाहती। भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्थाओं के चलते आम आदमी का जीना मुश्किल हो गया हैं। इस भ्रष्ट व्यवस्था के चलते आम आदमी में इन के प्रति घृणा और असंतोष, आक्रोश की भावना व्यापत हो रही हैं। सतीश जमाली जी ने अपनी विभिन्न कहानियों जैसे, 'अर्थतंत्र', 'चुनौती' 'दुःख-दर्द' , 'दुर्घटना' आदि में भ्रष्ट व्यवस्था की समस्याओं का चित्रण किया हैं। सतीश जमाली जी की कहानी 'दुर्घटना' में सेठ हुक्मचंद के बेटे गनेसी से हत्या हो जाती हैं। अपने बेटे द्वारा हत्या होने पर उसके पिता हुक्मचंद पुलिस एस.एच.ओ को एक लाख रूपए रिश्वत दी जाती हैं। पुलिस को अपना हिस्सा दे देने के बाद गनेसी को सबूतों के आभाव में बाइज्जत छोड़ दिया जाता हैं। तथा सबूतों कों मिटाने के लिए उन्हें पुलिस द्वारा सलाह दी जाती हैं।

"सेठ हुक्मचंद ने अपने बेटे महेशचंद के हाथ पच्चीस हजार रुपये और भेज दिए, पोस्ट-मार्टम रिपोर्ट की शुद्धि के लिए यह सलाह खुद एस.एच.ओ ने उन्हें दी थी"[3]।

नागरिक कहानी में जब कथानायक जो की चरस और शराब आदि का गैरकानूनी कार्य करता हैं, उसे उसका मित्र नए थानेदार के आने पर अंडरग्राउंड होने की बात कहता हैं तब सतीश जमाली ने अपनी अभिव्यक्ति कथानायक के शब्दों में इस प्रकार की "किसी थानेदार का सच्चा और धर्मात्मा होना एकदम व्यर्थ-सी बात हैं, ये लोग सात जन्म ले, तब भी ऐसे नहीं बन सकते। दरअसल बात यह होगी की यह थानेदार अधिक सख्ती दिखा कर दुसरे थानेदारों से अधिक रकम खाना चाहता होगा"[4]।

वर्तमान समय में बेरोजगारी भी एक बड़ी समस्यां बनकर उभरी हैं। बेरोजगारी की वजह से आज का युवा वर्ग बहुत ज्यादा परेशान हैं। वर्तमान व्यवस्था की विसंगतियों से देश भर में बेराजगार युवाओं की संख्या में वृद्धि हो रही हैं। आज बेरोजगार युवाओं के सामने अपने अस्तित्व का संकट उभर आया हैं। युवा वर्ग अपनी तंगहाली और आर्थिक अक्षमताओं को दूर करने के लिए अब कोई भी रास्ता अपनाने पर मजबूर हो गया हैं। अब उसे लिए कोई आदर्शवाद नहीं बचा हैं।

सतीश जमाली जी ने बेरोजगार युवाओं की समस्याओं को अपनी कहानियों में व्यक्त किया हैं। जमाली जी की कहानी 'जन-साधारण', 'सहपाठी' 'हड़ताल', 'नागरिक' आदि में बेरोजगार युवाओं की समस्याओं का चित्रण मिलता हैं वहीँ 'जीव' कहानी में रोजगार के तलाश में शहर आये युवा की समस्याओं को व्यक्त किया हैं। "मैं खुद भी दुखी हूँ ही, इस गंदे काम से चालीस-पचास रुपये रोज बना लेने से मैं सुखी नहीं हूँ। इस काम के लिए और आपस में मेल-जोल बनाये रखने के लिए मुझे कुछ लोगों के साथ चरस पीनी पड़ती हैं, जुआ खेलना पड़ता हैं.....यह गन्दा काम शुरू किया था, तो तुम्हे तो पता ही हैं की यह सोच कर किया था की एक साल से अधिक इस काम में न पड़ूंगा, तब तक जितना पैसा इकठ्ठा हो जायेगा, उसी से फिर कोई ढंग का काम शुरू कर दूंगा"[5]।

गरीबी आज भी हमारे देश की प्रमुख समस्यां बनी हुई हैं, अस्सी के दशक में गरीबी से जूझ रहे भारत के सामने उस समय की सरकार 'गरीबी हटाओं' जैसे वादों को लेकर सत्ता पर काबिज हुई पर न उन्होंने अपने वादों को पूरा किया और न ही आम व्यक्ति के जीवन में कोई बदलाव आया। यह एक विडम्बना हैं की आज भी हमारा देश गरीबी और भुखमरी की समस्यायों से जूझ रहा हैं। आज भी एक बड़ा वर्ग ऐसा हैं जो मूलभूत आवश्यकताओ के लिए भी संघर्ष कर रहा हैं।

एक ओर वर्तमान समय की चकाचौंध और आधुनिकता के इस दौर में भी गरीबी एक अभिशाप बनकर उभरी हैं। भ्रष्ट लोकतान्त्रिक व्यवस्था के कारण आज भी शोषित वर्ग अपना जीवन तंगहाली और अभावों में गुजरने को विवश हैं। सतीश जमाली जी ने गरीब वर्ग की समस्याओं को बहुत ही संजीदगी एवं यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया हैं। उनकी कहानी, 'पुल' और ठाकुर-संवाद में ऐसे ही वर्ग की समस्याओं का चित्रण मिलता हैं।

सतीश जमाली की कहानियों में विभिन्न समसामयिक समस्याओं का वर्णन मिलता हैं जिनमे आर्थिक असमानता से उपजी समस्याएँ, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी, छात्र असंतोष, नशाखोरी बाल श्रम और शोषण, सांप्रदायिक दंगे आदि मुख्य हैं।

सतीश जमाली जी की कहानियों में चित्रित समस्याएँ आज के दौर में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जीतनी उस दौर में थी। सतीश जमाली जी के कहानियों के पात्र आम आदमी और उनकी समस्याओं से जुड़े हुए हैं । जमाली जी ने इन सभी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया हैं। आज के आधुनिक समय में भी समाज का निम्न वर्ग उन्ही समस्याओं से संघर्ष कर रहा हैं जिससे वो पहले भी कर रहा था। अगर एक दृष्टिकोण से देखा जाये तो आजादी के इतने वर्षो बाद भी निम्न वर्ग के जीवन स्तर में कोई सुधार नहीं आया हैं। आज भी उनकी वही समस्याएँ है और वही संघर्ष और उनका शोषण भी उन्ही तरीकों से किया जा रहा हैं।

सन्दर्भ-सूची :-

1.हिंदी साहित्य का इतिहास (स.)डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, पृ.21
2.सतीश जमाली, कहानी संग्रह (प्रथम पुरुष), युद्ध, पृ. 23
3.सतीश जमाली, कहानी संग्रह (सहपाठी तथा अन्य कहानियाँ) दुर्घटना, पृ. 81
4.सतीश जमाली, कहानी संग्रह (जंग-जारी) नागरिक, पृ. 219
5.सतीश जमाली, कहानी संग्रह (जंग-जारी) थके-हारे, पृ. 190